कहे इद्रांवती आनंद, वालोजी रंगे गाए छे।
हजी रामतडी वृध, वसेके थाय छे रे।। १२ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि वालाजी बड़े आनन्द में गा रहे हैं और इसलिए यह खेल और भी बढ़ता जाएगा।

॥ प्रकरण ॥ ३५ ॥ चौपाई ॥ ७१३ ॥

राग वेराडी चरचरी

रमत रास करत हांस, कान्ह मोहन वेल री।
कान्ह मोहन वेल, सखी कान्ह मोहन वेल री।। १ ।।

कन्हैया मोहन बेलि के समान रास की रामतें अति प्रसन्नता के साथ करते हैं।

रासमां विनोद हांस, हांसमा करूं विलास।
पूरतो अमारी आस, करे रंग रेल री।। २ ।।

रास के बीच में विनोद होता है। हंसी होती है। हंसी में विलास करती हूं और अपनी इच्छानुसार रंगरेलियां मनाकर मनोकामना पूरी करती हूं।

वालैयो वन विलासी, गयो तो अमथी नासी।
कठण करीने हांसी, दीधां दुख दोहेल री।। ३ ।।

वालाजी वन में विलास करके हम से भाग गए थे। उन्होंने ऐसी कठिन हंसी करके बहुत दुःख दिया।

सखियो करती मान, तेणे विरह ना कीधां पान।
विसरी सरीर सान, एवो कीधो खेल री।। ४ ।।

सखियों को जब अभिमान आया तो उनको विरह का रस पान कराया। जिससे उन्हें शरीर की सुध ही भूल गई, ऐसा खेल खिलाया।

मन तामसियो हरती, मान माननियो करती।
अंगे न विरह धरती, तो अम पर थई हेल री।। ५ ।।

तामसी सखियों ने मन को अपने वश में कर लिया। मानवन्ती (मानिनी) सखियां मान करती थीं। उनके अंगों में विरह का प्यार नहीं था, इसलिए हमको इतना कष्ट (जुदाएगी का) सहन करना पड़ा।

आतुर करी सर्वे जन, मीठडां बोले वचन।
हेतसूं हरतो मन, एवो अलवेल री।। ६ ।।

वालाजी इतने अलबेले (अलमस्त) हैं कि उन्होंने अपने प्यार भरे वचनों से सबको आतुर कर बड़ा प्यार देकर सखियों के मन को हर लिया है।

हवे न मूकूं अधखिण, धुतारो छे अतिघण।
पल न वालूं पांपण, भूलियो पेहेल री।। ७ ।।

अब मैं इसे आधे क्षण के लिए भी नहीं छोड़ूंगी। यह बड़ा छलिया है। अब पलक भी नहीं झपकाओ, क्योंकि पहले एक बार भूल कर चुके हैं।

Nijanand App

इंद्रावती कहे साथ, हवे न कीजे विस्वास।
खिण न मूकिए पास, एवी बांधो वेल री।। ८ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे मेरे साथजी! अब इनका बिलकुल विश्वास न करो। एक क्षण के लिए भी इनका संग न छोड़ो। मोहन बेलि की भांति इनसे चिपटे रहो।

॥ प्रकरण ॥ ३६ ॥ चौपाई ॥ ७२१ ॥

राग धोलनी चाल

जुओ रे सखियो तमे वाणी वालातणी, बोलेते बोल सुहामणां रे।
मीठी मधुरी वात करे, हूं तो लऊं ते मुखनां भामणां रे।। १ ।।

हे सखी! वालाजी के वचन देखो। यह कितने प्यारे बोल बोलते हैं। इनकी माधुरी वाणी पर मैं न्यौछावर हो जाऊं।

हावसुं भाव करे वालो हेते, गुण ने घणां वालातणां रे।
रामत करतां रंग रेल करे, झकझोल मांहें नहीं मणां रे।। २ ।।

वालाजी बड़े ढंग से हाव-भाव करते हैं। इस गुण में उनकी जरा भी कमी नहीं है। रामत करते समय बड़ा आनन्द करते हैं तथा छेड़छाड़ में निपुण हैं।

जुओ रे सखियो मारा जीवनी वातडी, मारा मनमा ते एमज थायरे।
नेंणा ऊपर नेह धरी, हूं तो धरूं वालाजीना पाय रे।। ३ ।।

हे सखियो! मेरे मन की एक बात देखो। ऐसा लगता है कि वालाजी के चरणों को अपने नेत्रों की पलकों पर धर लूं।

सुण सुंदरी एक वात कहूं खरी, ए ते एम केम थाय रे।
नेणां ऊपर केम करीस, ए तो नहीं धरवा दिए पाय रे।। ४ ।।

दूसरी सखी उत्तर देती है कि मैं स्पष्ट कहती हूं कि ऐसा हो ही नहीं सकता। वालाजी पलकों पर किसी तरह भी चरणों को नहीं धरने देंगे।

जो हूं एम करूं रे बेहेनी, मारा जीवनी दाझ तो जाय रे।
कोई विध करी छेतरूं वालो, तो मूने केहेजो वाह वाह रे।। ५ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे सखी! यदि मैं ऐसा कर लूं तो मेरे जीव की तड़प शान्त हो जाए। किसी प्रकार से वालाजी को ठग लूं तो मेरे को शाबासी देना।

सुणो रे वालैया वात कहूं, तमारा भूखण बाजे भली भांत रे।
लई चरणने निरखूं नेत्रे, मूने लागी रही छे खांत रे।। ६ ।।

हे वालाजी! सुनो, आपके आभूषण आवाज करते हैं। मेरी इच्छा है कि आपके चरणों को नैनों से निहारूं।

जुओ रे सखियो मारा भूखण बाजतां, झांझरिया ते बोले रसाल रे।
लेनी पग धरूं तुझ आगल, पण बीजी म करजे आल रे।। ७ ।।

वालाजी कहते हैं, सखियो! देखो, हमारे आभूषण बजते हैं। झांझरी की आवाज रस भरी है। मैं अपना पैर तुम्हारे आगे रख देता हूं। तुम कोई शरारत नहीं करना।

Nijanand App